दवाई बनी नहीं है, बहस चालू है

लंदन के वूल्फसन इंस्टीट्यूट ऑफ प्रिवेंटिव मेडिसिन के निकोलस वाल्ड और माल्कोम लॉ ने सुझाव दिया है कि यदि 6 दवाइयों की एक मिश्रित गोली 55 वर्ष से अधिक उम्र वाले सारे (जी हां, सारे) लोगों को प्रतिदिन दी जाए तो हृदय आघात का खतरा 88 प्रतिशत कम हो जाएगा और औसत आयु में 11 वर्ष का इजाफा होगा। इस गोली में वे पांच ऐसी दवाइयां मिलाना चाहते हैं जो हृदय आघात के खतरों को कम करती हैं - स्टेटिन, बीटा-ब्लॉकर, एस्पिरिन वगैरह। इसके अलावा वे इसमें एक विटामिन फॉलिक एसिड भी मिलाना चाहते हैं। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में प्रकाशित इस सुझाव पर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं हुई हैं।

जर्नल के संपादक रिचर्ड स्मिथ ने एक पत्रकार वार्ता में कहा कि "इस औषधि का परीक्षण तत्काल शुरू हो जाना चाहिए।" दूसरी ओर, एक हृदय विशेषज्ञ निसेन का कहना है कि "मुझे तो लगा कि यह कोई मज़ाक है। यह विचार मूर्खतापूर्ण और हास्यापद है।" इन एकदम विपरीत प्रतिक्रियाओं के कारण भी हैं।

इस मिश्रित गोली (पोलीपिल) का विरोध करने वालों का कहना है कि 55 साल से ऊपर के सारे लोगों को कोई दवाई देने का मतलब है कि आप उन लोगों को भी साइड प्रभाव की चपेट में ले रहे हैं जिन्हें शायद कभी हृदयाघात नहीं होगा। वे अधिक से अधिक इतना मानने को तैयार हैं कि यह गोली (यदि बनी) उन लोगों को दी जाए जिनमें हृदयाघात की चेतावनी का कोई लक्षण मौजूद हो - जैसे कोलेस्ट्रॉल का उच्च स्तर या उच्च रक्त चाप।

मगर गोली के समर्थक कहते हैं कि कई बार ऐसे लोगों को भी दिल का दौरा पड़ जाता है जिनमें चेतावनी का कोई लक्षण नहीं होता। इसलिए बेहतर होगा कि यह गोली सबको खिलाई जाए।

गोली के विरोधी यह सवाल भी पूछते हैं कि सब लोगों को यह गोली खिलाने की लागत का भुगतान कौन करेगा? क्या उन व्यक्तियों को इसका दाम चुकाना होगा? या क्या सरकार चुकाएगी? हिमायतियों का कहना है कि खर्चा कोई भी उठाए मगर जो लाभ मिलेंगे वे इस खर्चे से कहीं ज़्यादा होंगे।

एक सवाल यह भी है कि इस गोली का परीक्षण कैसे होगा। आम तौर पर रोकथाम के ऐसे उपाय की कारगरता को आंकना सरल काम नहीं होता। सुझाव देने वाले वाल्ड और लॉ का मत है कि इस गोली के परीक्षण के लिए हज़ारों वालन्टियर्स को छह दवाइयों के अलग-अलग तरह के मिश्रण देकर देखना होगा। अन्ततः कोई एक मिश्रण सबके लिए तैयार हो जाएगा। इस पर स्टीव निसेन का मत है कि सारे लोगों को छह दवाइयों का एक-सा मिश्रण देना खतरे से खाली नहीं है। हो सकता है किसी-किसी व्यक्ति का रक्तचाप खतरनाक हद तक कम हो जाए। एक अनुमान है कि सारे लोगों को इन दवाइयों के अलग-अलग मिश्रण देने के लिए 100 से ज़्यादा किस्म की गोलियां तैयार करनी होंगी और फिर हर व्यक्ति को तय करना होगा कि उसके लिए कौन-सी गोली उपयुक्त है।

छह दवाइयों को मिलाकर देने के सम्बंध में एक चिकित्सकीय समस्या भी है। आम तौर पर दवाइयों का मिश्रण करने पर यह जांचना आवश्यक होता है कि उनकी आपस में क्या-क्या क्रियाएं हो सकती हैं, क्या वे एक-दूसरे के साइड प्रभावों को घटा-बढ़ा सकती हैं। दो दवाइयों के मिश्रणों में ही यह जांच एक कठिन प्रक्रिया होती है, तो छह दवाइयों की तो बात ही जाने दें। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह गोली अच्छे-खासे तन्दुरुस्त लोगों को दी जाएगी। ***(स्रोत फीचर्स)***